सिद्धार्थनगर जनपद (उ0प्र0) में भूमि उपयोग प्रतिरूप

जवाहिर लाल
शोध छात्र, भूगोल विभाग,
दी0दी0उ0गो0वि0, गोरखपुर
ईमेलः shym521981@gmail.com

सारांश

अध्ययन क्षेत्र का वर्तमान भूमि उपयोग प्रतिरूप स्थलाकृति, जलवायु, मिट्टी मानव क्रियाओं और प्रौद्योगिकी आदानों ऐसे अनेकों कारको का प्रतिफल है। जनसंख्या के अढ़ते दबाव एवं परिणामस्वरूप खाद्यान्नों की बढ़ती मांग विकासात्मक गतिविधियों और प्रौद्योगिकी उन्नति के कारण भूमि उपयोग के प्रतिरूप और प्रकार में निरन्तर परिवर्तन देखा गया है। भूमि पर मनुष्य द्वारा विभिन्न प्रकार के क्रियाकलाप किये जाते है। जिसमें वन एवं चरागाह, कृष्य बंजर, परती भूमि, उसर एवं बंजर, चारागाह, उद्यान एवं बागवानी एवं शुद्ध कृषित भूमि सम्मिलित होती है। ***डी0 एस0 चौहान*** *(1966) के अनुसार ''प्राकृतिक वातावरण में भूमि उपयोग एक तत्सामयिक प्रक्रिया है जबकि मानवीय इच्छाओ के अनुरूप उपयोग एक दीर्घकालिक प्रक्रिया हैं।''*

प्रस्तावना

अध्ययन क्षेत्र का वर्तमान भूमि उपयोग प्रतिरूप स्थलाकृति, जलवायु, मिट्टी मानव क्रियाओं और प्रौद्योगिकी आदानों ऐसे अनेकों कारको का प्रतिफल है। जनसंख्या के बढ़ते दबाव एवं परिणामस्वरूप खाद्यान्नों की बढ़ती मांग विकासात्मक गतिविधियों और प्रौद्योगिकी उन्नति के कारण भूमि उपयोग के प्रतिरूप और प्रकार में निरन्तर परिवर्तन देखा गया है। भूमि पर मनुष्य द्वारा विभिन्न प्रकार के क्रियाकलाप किये जाते है। जिसमें वन एवं चरागाह, कृष्य बंजर, परती भूमि, उसर एवं बंजर, चारागाह, उद्यान एवं बागवानी एवं शुद्ध कृषित भूमि सम्मिलित होती है। **डी0 एस0 चौहान** (1966) के अनुसार ''प्राकृतिक वातावरण में भूमि उपयोग एक तत्सामयिक प्रक्रिया है जबकि मानवीय इच्छाओ के अनुरूप उपयोग एक दीर्घकालिक प्रक्रिया हैं।''

आर0 वारलो के अनुसार– भूमि संसाधन का उपयोग, भूमि समस्या एवं उसके नियोजन की विवेचना की वह धुरी है, जिसके अध्ययन के लिये निम्नलिखित दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है–

1. आर्थिक दृष्टि से सम्यक समान की स्थापना
2. भूमि संसाधन के अनुकूलतम उपयोग का निर्धारण
3. विभिन्न लागत कारकों यथा पूंजी–श्रम आदि के अनुपात से भूमि से अधिकतम लाभ प्राप्त करना।
4. फसलगत भूमि के उपयोग में मांग के आधार पर लाभदायक सामंजस्य तथा परिवर्तन का

सुझाव।

इस प्रकार भूमि उपयोग का अध्ययन एक उपयोगी प्रक्रिया है, जिसमें किसी क्षेत्र में पायी जाने वाली भूमि के अनुकूलतम उपयोग की प्रयोजना निर्मित की जाती है, जिससे मानव समाज को अधिकतम लाभ हो सकें। इसमें यह भी अनुशीलन किया जाता है कि ऊसर एवं बंजर भूमि तथा कृषि अयोग्य भूमि को कैसे कृषि योग्य भूमि के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है। स्वाभाविक है कि इससे फसलोत्पादन का परिक्षेत्र बढ़ेगा, जिससे खाद्य संसाधन की दृष्टि से क्षेत्र स्वालम्बी बनेगा। सिद्धार्थनगर जनपद के सन्दर्भ में यह तथ्य उल्लेखनीय है कि यह वन मात्र 1.24 प्रतिशत पर, चारागाह 0.26 प्रतिशत परिक्षेत्र पर एवं उद्यान वृक्षों एवं झाडियाँ 1.16 प्रतिशत परिक्षेत्र पर प्रतिवेदित है जो कि कुल प्रतिवेदित नहीं है, क्योंकि मैदानी परिक्षेत्र में न्यूनतम 10 प्रतिशत क्षेत्र वनों, उद्यान, बाग के अन्तर्गत समन्वित भूमि उपयोग का लाभ मानव समाज को प्राप्त हो सकता है।

उद्वेश्य एवं विधि तंत्र

शोध पत्र का मुख्य उद्वेश्य वर्ष (2017–2018) के आंकडों के आधार पर जनपद सिद्धार्थनगर के बदलते भूमि उपयोग प्रतिरुप के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करना।

प्रस्तुत अध्ययन में जिला सांख्यिकीय प्रत्रिका से प्राप्त आंकडों (2018) का प्रयोग किया गया है। तथ्यों के विश्लेषण हेतु सामान्य सांख्यिकीय विधि का प्रयोग करते हुए विश्लेषणात्मक प्रविधि का प्रयोग किया गया है। विश्लेषण इकाई हेतु विकास खण्डों को आधार बनाया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

जनपद सिद्धार्थनगर उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल में नेपाल की सीमा पर स्थित है। जनपद का विस्तार 27^0 0′ उत्तरी अक्षांश से 27^0 28′ उत्तरी अक्षांष तथा 82^0 45′ पूर्वी देशान्तर से 83^0 10′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। (चित्र संख्या 2.1)। इस जनपद के उत्तर में नेपाल राष्ट्र, दक्षिण में गोण्डा, बस्ती तथा संतकबीर नगर जनपद की सीमाएँ, पूरब में महाराजगंज तथा गोरखपुर जनपद की सीमाएँ तथा पश्चिम में बलरामपुर जनपद स्थित है। जनपद का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 2926.32 वर्ग कि0मी0 है। जो सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश के भौगोलिक क्षेत्रफल का 1.00% है। जनपद की 2011 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 2553526है तथा जनसंख्या धनत्व 884 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलो मीटर व लिंगानुपात प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या 970 है।

चित्र संख्या–1

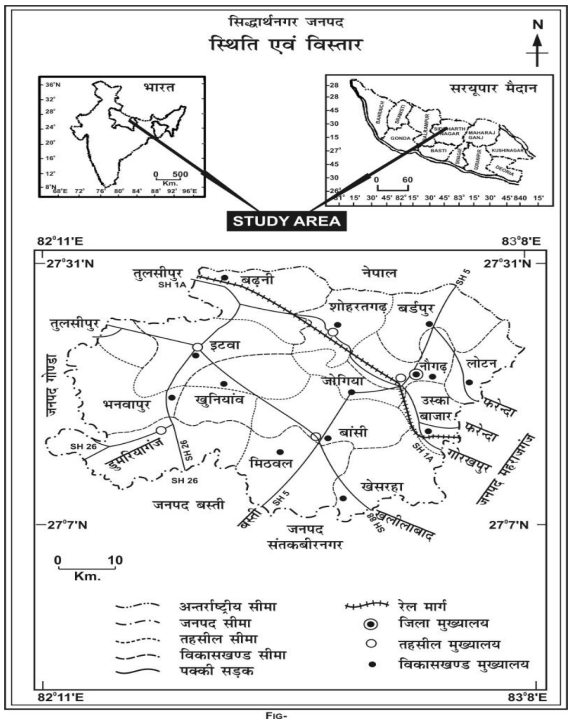

FIG-

सिद्धार्थनगर जनपद : सामान्य भूमि उपयोग प्रतिरूप (2017–18)

तालिका–1

क्र0स0	भूमि उपयोग क्षेत्र	क्षेत्रफल (हे0) में	प्रतिशत
1.	शुद्ध बोया गया क्षेत्र	228075	76.58
2.	कृषि बेकार भूमि	2306	0.77
3.	वन	3701	1.24
4.	कुल परती	17982	6.33
5.	उसर एवं कृषि अयोग्य भूमि	2952	0.99
6.	अन्य उपयोग में लाई गयी भूमि	38457	12.91
7.	उद्योनों वृक्षों एवं झाडियों का क्षेत्रफल	3541	1.18
	योग	**297014**	**100.00**

(स्रोत :– जिला सांख्यिकीय पत्रिका सिद्धार्थनगर (2018) द्वारा परिगणित

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि जनपद में कुल प्रतिवेदित क्षेत्र 297014, हेक्टेयर है, जिसमें 228075 हेक्टेयर (76.58 प्रतिशत) भाग पर कृषि कार्य किया जाता है, जबकि 0.77

प्रतिशत भाग कृषि योग्य बेकार भूमि है। अध्ययन क्षेत्र में 6.33 प्रतिशत भाग पर कुल परती भूमि है। क्षेत्र के 0-99 प्रतिशत भाग उसर एवं कृषि अयोग्य भूमि का विस्तार है। कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग में लाई गयी भूमि 12.91 प्रतिशत संलग्न है। उद्यान, बाग एवं झाड़ियों के अन्तर्गत 1.18 प्रतिशत भूमि है। जो मात्रा एवं उपयोग की दृष्टि से नगण्य है। तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि कृषि योग्य बंजर भूमि एवं अन्य परती के अन्तर्गत कुल 7.1 प्रतिशत भूमि है। जिससे उपचारित कर कृषि योग्य बनाया जा सकता है।

भूमि उपयोग के क्षेत्रीय प्रतिरूप के अध्ययन हेतु विकासखण्ड स्तर पर विभिन्न उपयोग में आने वाली भूमि का क्षेत्रफल निम्न तालिका में प्रदर्षित किया गया है–

सिद्धार्थनगर जनपद में विकासखण्डवार भूमि उपयोग प्रतिरूप (प्रतिशत में) वर्ष (2017–18)

तालिका–2

क्र0 स0	विकास खण्ड	शुद्ध बोया गया क्षेत्र	कुल परती	वन, चरागाह व उद्यान	उसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि
1.	खुनियांव	79.74	3.26	2.80	1.00	13.18
2.	इटवा	77.25	6.1	2.75	0.97	12.91
3.	भनवापुर	77.82	5.57	2.72	0.99	12.88
4.	बढ़नी	76.22	7.05	2.68	1.02	13.00
5.	शोहरतगढ़	71.74	6.25	2.57	0.98	18.42
6.	बर्डपुर	70.7	7.17	2.53	1.01	18.56
7	नौगढ़	74.48	7.76	2.95	1.72	13.06
8.	जोगिया	74.47	8.31	3.08	0.98	13.17
9	उस्का बाजार	78.69	7.56	2.53	1.29	9.91
10	डुमरियागंज	80.66	4.86	4.86	1.10	10.18
11	बांसी	77.32	5.53	2.46	1.01	13.90
12	मिठवल	80.11	4.40	2.84	0.90	11.72
13	खेसरहा	82.12	7.90	2.18	0.58	7.19
14	लोटन	71.92	8.10	2.46	1.46	16.04
	योग	**77.30**	**6.13**	**2.71**	**1.01**	**12.83**

(स्रोत– जनपद सांख्यिकीय पत्रिका 2017–18 द्वारा परिगणित)

उपरोक्त तालिका के अनुशीलन से स्पष्ट है कि भूमि उपयोग की दृष्टि से इस क्षेत्र का

विशेष महत्व है, क्योकि कषषि संबंधी उत्पादनों पर ही लोगों की आजिविका निर्भर करती है। उक्त तालिका दो (चित्र संख्या–2) के आधार पर भूमि उपयोग के प्रमुख संवर्गो का वर्णन निम्नवत है–

चित्र संख्या–2

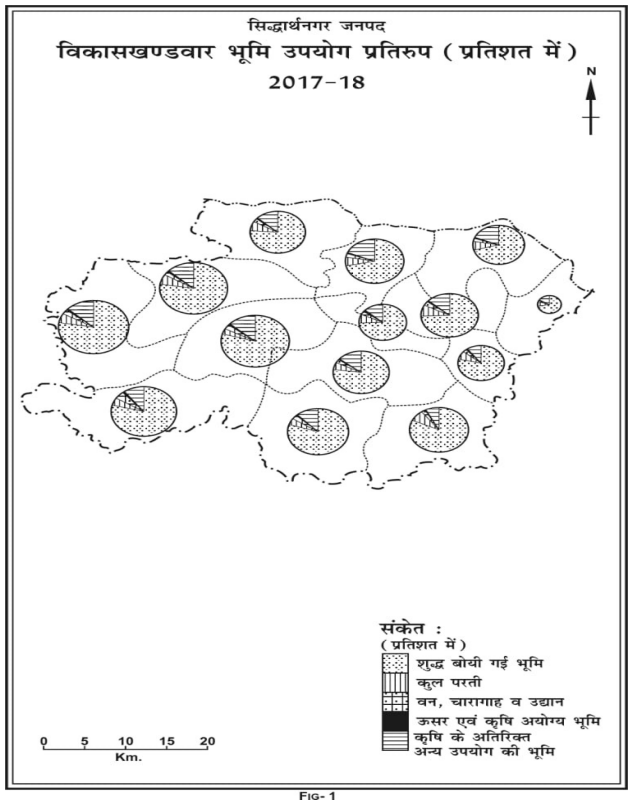

FIG- 1

1–कृष्य, बंजर व परती भूमि

इसके अन्तर्गत ऐसी भूमि सम्मिलित है जो कि बंजर एवं परती होने के बावजूद कृषि कार्य हेतु उपयोग में लायी जा सकती है, लेकिन वर्तमान में इसमें कृषि कार्य नहीं किया जा सकता है। इसमें बहुत अधिक क्षेत्रीय भिन्नता विद्यमान है। इसका सर्वाधिक प्रतिशत जोगिया विकासखण्ड (8.31 प्रतिशत) एवं न्यूनतम प्रतिशत (3.26) खुनियांव विकासखण्ड में पाया जाता है। लोटन, खेसरहा, उस्काबाजार, नौगढ़, बर्डपुर एवं बढ़नी विकासखण्ड में यह 7–8 प्रतिशत के बीच विस्तृत है। इससे स्पष्ट है कि इन विकासखण्डों में बंजर एवं परती भूमि का विस्तार अधिक है, जिसका उपयोग भविष्य में आवश्यकतानुसार कृषि संबंधी उपयोग में किया जा सकता है।

2–वन, चारागाह एवं उद्यान

इस भूमि का पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से क्षेत्र की लगभग 30 प्रतिशत भूमि वनों, चारागाह

एवं उद्यान के रूप में आच्छादित होना चाहिये, लेकिन भूमि पर जनसंख्या के अधिक भार के कारण खाद्यान की मांग दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, जिससे इससे संबंधित भूमि कृषि कार्य के अन्तर्गत प्रयुक्त की जा रही है। जनपद में 2.71 प्रतिशत क्षेत्र इसके अन्तर्गत आता है, जो अत्यन्त कम है, आये दिन इसमें निरन्तर ह्रास हो रहा है।

3–कृश्येत्तर अन्य उपयोग की भूमि

इस भूमि के अन्तर्गत वह भूमि सम्मिलित है जिसका उपयोग कृषि कार्य के अतिरिक्त कार्यों में किया जाता है जैसे–आवास, निर्माण, खलिहान, खेल मैदान, स्कूल, सड़क निर्माण इत्यादि। इसके अन्तर्गत सबसे अधिक क्रमशः बर्डपुर, शोहरतगढ़, तथा लोटन विकासखण्ड जिसमें (16–18 प्रतिशत) के बीच तथा सबसे कम क्रमशः खेसरहा, उस्काबाजार, डुमरियागंज विकासखण्ड जो (7–10 प्रतिशत) के बीच क्षेत्रों का विस्तार है। जनसंख्या, अधिवास, सड़क एवं नहर सिंचाई का वृद्धि एवं विकास होने के कारण इसके प्रतिशत में वृद्धि होना स्वाभाविक है।

4– उसर एवं बंजर भूमि

यह भूमि क्षारीय, कंकरीली, पथरीली होने के कारण कृषि कार्य हेतु अनुपयोगी होती है, जिससे इसका उपयोग समाज द्वारा नहीं के बराबर किया जाता है और यह रिक्त रूप में पायी जाती है। कुल प्रतिवेदित क्षेत्र में 1.01 प्रतिशत भाग पर इसका विस्तार है। सबसे अधिक नौगढ़ विकासखण्ड एवं न्यूनतम खेसरहा विकासखण्ड में पाया जाता है। वर्तमान में संचालित विभिन्न तकनीकों द्वारा इस भूमि को उपचारित कर इसका उपयोग कृषि आनुशंगिक अन्य कार्यों में किया जा सकता है।

5– शुद्ध कृषि भूमि

अध्ययन क्षेत्र में निरन्तर बढ़ती जनसंख्या, सिंचाई के साधनों के विस्तार, समतल उपजाऊ भूमि एवं अनुकूल मानसूनी जलवायु के कारण जनपद के कृषि परिक्षेत्र में वृद्धि हुयी है। ग्रामीण परिक्षेत्र के कुल 228075 हेक्टेयर भूमि पर कृषि कार्य किया जाता है, जो कुल प्रतिवेदित क्षेत्र का 76.58 प्रतिशत है। यहां शुद्ध कृषित भूमि का क्षेत्रीय प्रतिरूप निम्न तालिका में प्रस्तुत है–

सिद्धार्थनगर जनपद : शुद्ध कृषित भूमि (वर्ष 2017–18)

तालिका–3

संवर्ग	मान (प्रतिशत में)	विकास खण्डों का क्रम	संख्या
न्यून	< 72	6,5,14	3
मध्यम	72–76	8,7	2
उच्च	76–80	4,2,11,3,9,1	6
अतिउच्च	> 80	12,10,13	3
योग	–	–	14

स्रोत :– जनपद सांख्यिकीय पत्रिका (2017–18) द्वारा परिगणित

चित्र संख्या–3

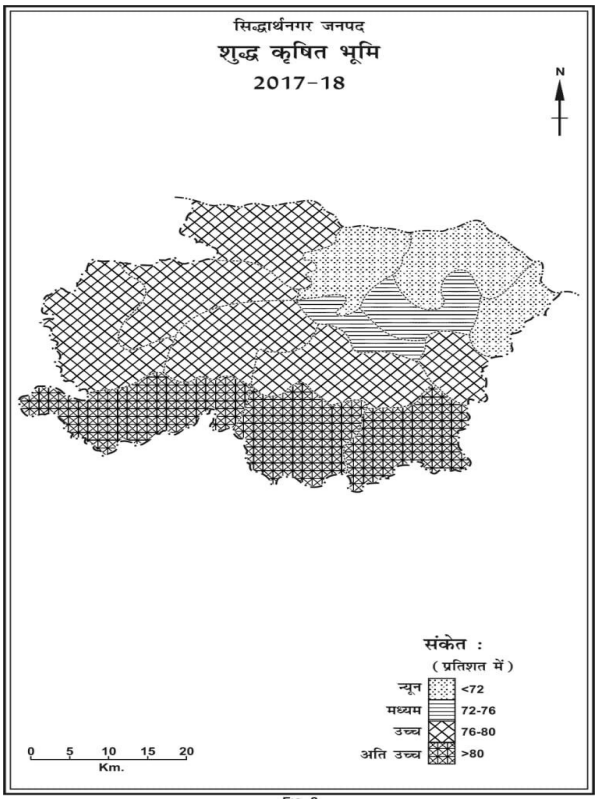

उपरोक्त तालिका एवं चित्र के अनुषीलन से स्पश्ट है कि षुद्ध कृशित भूमि के क्षेत्रीय वितरण से पर्याप्त भिन्नता दृश्टिगत होती है। न्यूनतम संवर्ग के अन्तर्गत तीन विकासखण्ड क्रमषः बर्डपुर, षोहरतगढ़ व लोटन विकासखण्ड सम्मिलित है। जिसमें 70–72 प्रतिषत भूमि षुद्ध कृशित क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। मध्यम संवर्ग के अन्तर्गत जोगिया व नौगढ़ विकासखण्ड जबकि उच्च सम्वर्ग के अन्तर्गत क्रमषः बढ़नी, इटवा, बांसी, भनवापुर, उस्काबाजार तथा खुनियांव सहित कुल 6 विकासखण्ड सम्मिलित हैं, जो 76–80 प्रतिषत के बीच षुद्ध कृशित क्षेत्र पाया जाता है। वहीं अति उच्च सम्वर्ग में क्रमषः मिठवल, डुमरियागंज व खेसरहा विकासखण्ड आते हैं जो 80 प्रतिषत से अधिक क्षेत्र पर षुद्ध कृशि भूमि की उपलब्धता है। राप्ती, बुढ़ीराप्ती नदियों के किनारे स्थित विकासखण्डों में प्रायः बाढ़ का प्रभाव अधिक होने के कारण षुद्ध कृशित भूमि का प्रतिषत अपेक्षाकृत कम पाया जाता है।

निष्कर्ष

सिद्धार्थनगर जनपद के भूमि उपयोग प्रतिरूप के गहन विवेचन से स्पष्ट होता है कि यहाँ शुद्ध बोया गया क्षेत्र 77.30 प्रतिशत है, यह राष्ट्रीय औसत 46.48 एवं प्रदेश के औसत 68.93

प्रतिशत से काफी अधिक है जो कृषि कार्य हेतु पर्याप्त है, लेकिन यहाँ पर तथ्य उल्लेखनीय है कि वन व चारागाह का क्षेत्र तीन प्रतिशत से भी कम है जो चिंताजनक है। जनसंख्या की निरन्तर वृद्धि को देखते हुए अनुकूलता के अनुरूप इसे शुद्ध परती एवं उसर भूमि को शुद्ध कृषित भूमि में परिवर्तित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त सिंचाई के साधनों में वृद्धि द्वारा द्विफसली भूमि को बढ़ाया जा सकता है, जिससे कुल उत्पादन में वृद्धि कर कृषकों की आर्थिक दशा को समुन्नत किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1– सिद्धार्थनगर जनपद सांख्यिकीय पत्रिका, 2018

2– तिवारी, आर0सी0 (2016) : भारत का भूगोल, प्रवालिका पब्लिकेशन्स।

3– सिंह, ब्रजभूषण (1971) : भूमि उपयोग क्षमता, अवस्था एवं अनुकूलतम भूमि उपयोग, उत्तर भारत भूगोल पत्रिका, अंक 7 (2), (6–12)

4– Shing,B.B (1977), '' Concept of Land Utilization, India Geography Review" Val-11.

5– शंकर, रमा (2016), 'भूमि उपयोग एवं जनसंख्या अन्तर्सम्बन्धः जनपद इलाहाबाद (उ0प्र0) का एक भौगोलिक अध्ययन' पी0एच0डी0 षोध प्रबन्ध भूगोल विभाग बी0एच0यू0, पृ0 **211–220**